इजता दी रोटी तू खवाई साइयाँ

इजता दी रोटी तू खवाई साइयाँ किसे दा मोहताज न बनाई साइयाँ,
खैर सदा रेहमता दी पावइ साइयाँ,किसे दा मोहताज न बनाई साइयाँ,

दुनिया जहां विच इहो कुझ राखियां हसदे नाल एथे हर कोई हस्या,
रोंदेया नु कला न रवाई साइयाँ,किसे दा मोहताज न बनाई साइयाँ,

हक़ ते हलाल वाली रूखी सुखी चंगी है,
तेरे तो हमेशा असा इहो मंग मंगी है,
पाप दी कमाई तो बचावी साइयाँ किसे दा मोहताज न बनाई साइयाँ,

अपने पराये जेहड़े खुशिया दे साथी ने,
दुखा च ओ लाम्बे ओहि दिंदे दिन राति ने,
सुखदुख विच तू निभाभी साइयाँ,
किसे दा मोहताज न बनाई साइयाँ,

जिंदगी जे साहनु दिति ईजाता दी साइयाँ मौत भी तू साहनु देवे इज्जाता दी साइयाँ,
बेड़ी सदी साहिला ते लावी साइयाँ,
किसे दा मोहताज न बनाई साइयाँ,

Source: https://www.bharattemples.com/ijaata-di-roti-tu-khwavi-saiyan/

Complete Bhajans Collections - Download Free Android App
https://play.google.com/store/apps/details?id=com.numetive.bhajans

Facebook: https://www.facebook.com/bharattemples/
Telegram: https://t.me/bharattemples
Youtube: https://www.youtube.com/channel/UC24oJCxZJyhhKzSUD-Lt9Tw